

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

28-जनवरी-2015 18:49 IST

एनसीसी रैली 2015 में प्रधानमंत्री के उद्बोधन का मूल पाठ

देशभर से आए हुए NCC के सभी Cadets, पड़ोसी देशों से आए हुए हमारे सभी Cadet मेहमान, विशाल संख्या में उपस्थित भाईयो और बहनों।

मुझे भी आज बचपन की यादें ताजा हो गईं, क्योंकि मैं भी NCC में Cadet रहा, हमारे रक्षा मंत्री भी NCC के Cadet रहे हैं, हमारे रक्षा राज्य मंत्री भी NCC के Cadet रहे हैं, हमारे देश की प्रथम महिला विदेश मंत्री, सुषमा जी भी Cadet थीं। सीने जगत में जया बच्चन जी हैं वो भी कभी NCC की Cadet हुआ करती थी। इन दिनों खेल जगत में हिंदुस्तान का नाम रोशन करने वाले अंजलि भागवत हो, लज्जा गोस्वामी हो, ये लोग भी कभी न कभी NCC के Cadet रहे हैं। जिन्होंने बाद में पुलिस फोर्स में सर्विस की.. किरण बेदी जैसे बहुत लोग हैं, जो पहले NCC के कैडेट रहे हैं।

तो मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि जहां से मुझे देशभक्ति के और समूह जीवन के संस्कार मिले उस माहौल में दोबारा एक बार आप सबके बीच आने का अवसर मिला है। मैं NCC कैडेट रहा लेकिन दिल्ली आने के लिए हमारा selection कभी नहीं हुआ। और इसलिए मैं समझ सकता हूं कि आपका selection हुआ होगा तो आपने वहां अपने आप को किस प्रकार से प्रस्थापित किया होगा।

जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो हमारे स्कूल से एक सुमन चौधरी नाम का लड़का Cadet था, उसको दिल्ली आने का मौका मिला था 26 जनवरी के दिन। और वो हमारे स्कूल का हीरो था। जब वो दिल्ली से वापस आया सारा स्कूल उसको मिलने जाना, पूछने जाना, अनुभव सुनना और हम उसे देखकर बड़ा गौरव अनुभव करते थे, क्योंकि वो हमारे स्कूल से 26 जनवरी को यहां आया था। आप लोग भी जिन लोगों के बीच से यहां आए हैं वहां भी आपके लिए एक गौरव का माहौल होगा। जब आप जाएंगे तो बहुत सी बातें आपसे वो पूछना चाहेंगे।

आप लोग अब घर जाने के लिए बड़े उत्सुक भी होंगे, इच्छुक भी होंगे। आपको लगता होगा जल्दी छुट्टी हो जाए अच्छा होगा। जो लोग राजपथ पर जाते थे, रात में एक बजे उठना, तीन बजे जाकर के practice करना। जिनको राजपथ के लिए मौका नहीं मिला था उनको पांच बजे उठना और दिल्ली की इस ठंड में क्या-क्या अनुभव नहीं किया होगा आपने, और कभी सोचते भी होंगे अच्छा हो कल सुबह पेट में दर्द हो जाए। अच्छा हो सुबह उठाने वाले यह कमरा भूल जाए। बहुत सी बातें मन में आई होंगी। लेकिन आज बार जब मैदान में आते होंगे फिर वही जज्बा, वही उमंग, वही तरंग, वही उत्साह।

एक प्रकार से मेरे सामने लघु भारत है और भारत के भविष्य का लघु रूप है। एक Cadet के रूप में जब हम समूह जीवन का अनुभव लेते हैं चाहे अपने राज्य में समूह जीवन का अनुभव हो, या पूरे राष्ट्र के लोगों के बीच में हो। तब हम एकता के सूत्र की अनुभूति करते हैं। हम NCC में समाज जीवन में यह सुनते आते हैं - कच्छ हो या कोहिमा, अपना देश अपनी माटी। विविधताओं से भरा हुआ अपना देश। जब तक अपने देश के अन्य लोगों से मिलते नहीं है या वहां जाते नहीं है। हमारा देश कितनी विविधताओं से भरा हुआ है। और विविधता में एकता यही हमारे देश का सौंदर्य है, यही हमारे देश की ताकत है, यही हमारे देश की स्मृद्धि है और वही हमें सदा सर्वदा एक नई प्रेरणा भी देती है।

स्वामी विवेकानंद जी के जीवन को हम जानते हैं। उन्होंने पूरे भारत का एक परिराजक के रूप में भ्रमण किया था। वो देश को आत्मसात करना चाहते थे। महात्मा गांधी अफ्रीका से आए तो उन्होंने ट्रेन में पूरे हिंदुस्तान का भ्रमण किया। वे पूरे भारत को आत्मसात करना चाहते हैं, हिंदुस्तान के हर साथ को वो जी लेना चाहते थे। अब्दुल कलाम जी की अगर आप जीवन चरित्र पढ़ेंगे तो वो भी कहते हैं कि अपने गांव में पहली बार जब दिल्ली जाने के लिए निकला तो कितने परिवेश, कितने प्रकार के खान-पान कितने प्रकार की बोलियां - मुझे एक भारत का एहसास हुआ। उसी प्रकार से आपको इस एक महीने में एक संपूर्ण भारत उसकी विविधताओं का एहसास होगा और यह एहसास आपके अपने भीतर को विशालता की ओर ले जाता है। छोटे दायरे से बहुत बड़े विशाल फलक पर ले जाता है। अपने आप में एक संस्कार होते हैं। औरों के साथ जीना, औरों को जानना, ये भी अपने आप में बहुत बड़ा कौशल्य होता है। और ये इस disciplined life के दौरान हमें एक हमें जीने का अवसर मिलता है।

जब हम परेड करते हैं तो सिर्फ कदम नहीं मिलते हैं। जब कदम मिलते हैं तो मन भी मिलता है और जब कदम मिल जायें मन मिल जाये तो मकसद भी मिल जाता है और इसीलिए... और वही मकसद होता है जो हमें आगे जाने की प्रेरणा देता है, ताकत देता है। 11 लाख से भी अधिक कैडेट एक साथ discipline के साथ यूनिफार्म के लाइफ के साथ और भारत में सीमा पर रक्षा करने वाले अपने जवान उनके प्रति एक एकात्मता की अनुभूति करता है। स्कूल में विद्यार्थी NCC की यूनिफार्म पहनता है तो मन से उसे लगता है मैं भी भारत माता की रक्षा करने वाले सीमा पर बैठे हुए उसी में से एक हूँ। ये जो राष्ट्र रक्षा की अनुभूति होती है उसके साथ जो एकात्मता का भाव आता है ये हमारी ज़िन्दगी की एक बहुत बड़ी ताकत बन जाता है।

मुझे विश्वास है की आप जिनको यहाँ आने का मौका मिला है वे और जो 11 लाख से अधिक NCC के कैडेट हैं उनको भी, और वे देश हम कितने भाग्यवान हैं 65% जनसंख्या आज हमारे देश की 35 साल से भी कम उम्र की है। जो देश इतना जवान हो, जिस देश के सपने इतने जवान हो, जिस देश की उर्जा इतनी जवान हो उस देश के कदम भी उसी जवानी के मुताबिक होते हैं। उस देश की सिद्धियाँ भी उसी जवानी को शोभा दे वैसी होती है। और इसलिए आपके माध्यम से पूरे राष्ट्र की युवा शक्ति इस बात की अनुभूति करे, गौरव करे, एहसास करे कि हम इन ऊँचाइयों को पार कर सकते हैं।

हमने देखा बहुत बड़ी मात्रा में Girl Cadets भी हैं और कल तो आपने देखा होगा 26 जनवरी की परेड एक प्रकार से स्त्री शक्ति को समर्पित हो गई। देश ने देखा कि हमारे पास न सिर्फ रानी लक्ष्मीबाई, न सिर्फ जीजा माता लेकिन अब हर गांव, हर परिवार में रानी लक्ष्मीबाई और जीजा माता पैदा हो रही हैं। यह सामर्थ्य, देश की नारी शक्ति की यह अनुभूति देश, की अपने आप एक बहुत बड़ी नई धरोहर बनती है, नई ताकत बनती है।

मैंने देखा अभी आपने एक टेबलो दिखाया, स्वच्छ भारत का। स्वच्छ भारत, यह कार्यक्रम नहीं है। स्वच्छ भारत, यह कोई event नहीं है। स्वच्छ भारत, यह स्वभाव बदलने का प्रयास है। जब तक हिंदुस्तान के सवा सौ करोड़ नागरिकों में स्वच्छता यह स्वभाव नहीं बनता है, तब तक हम लोगों को काम करना होगा। और मैं मानता हूँ यह सब संभव है। एक बार बचपन से भी यह संस्कार शुरू हो जाए तो जीवनभर वो बाते रहती हैं मन में। आप NCC के Cadets के माध्यम से, एक तरफ तो हम स्वच्छता के लिए जरूर काम करें। लेकिन लेकिन साथ-साथ जिस स्कूल में हो, कॉलेज हो, जिस गांव में, जिस परिवार में हो, समाज में हो हर पल स्वच्छता एक स्वभाव कैसे बने? हम स्वच्छता के संबंध में कितने जागरूक हो? गलती से भी गंदगी न करें। आप देखिए भारत जिसके पास इतनी महान विरासत है अगर उसमें एक बार स्वच्छता जुड़ जाएगी तो पूरे विश्व में भारत के तरफ देखने का नजरिया बदल जाएगा। भारत के प्रति गौरव से देखेंगे लोग। और मैं मानता हूँ यह भी भारत मां की सेवा करने का उत्तम रास्ता है।

21 जून, United Nation ने विश्व योगा दिवस के रूप में घोषित किया है। जो जो भी लोग योगा में भरोसा करते हैं, योगा के विषय में जानते हैं उन सबके लिए ये एक गौरव की घटना है। अब योग यह किसी सीमा से सिमटा हुआ नहीं है। किसी एक ही भाषा के लोगों को विषय नहीं रहा। न ही किसी एक उम्र के लोगों का विषय रहा। आज योग दुनिया के हर कोने में पहुंचा है। हर समाज में पहुंचा है, हर भाषा भाषी में पहुंचा है, हर उम्र के लोगों में पहुंचा है, स्त्री और पुरुष में भी पहुंचा है। योग ने एक वैश्विक रूप ले लिया है। लेकिन तब भारत की एक विशेष जिम्मेवारी बनती है कि जिस धरती पर से योग की कल्पना का जन्म हुआ, हमें विश्व को सही योग का परिचय करवाना होगा। योग की सभी बातें विश्व तक पहुंचानी होगी और वो भी एक संतुलित संपन्न और सशक्त मानवजात के लिए आवश्यक है, इस रूप में योग की प्रस्तुति हो। मैं देशभर के एनसीसी के कैडेट से आग्रह करता हूँ कि अभी से आप योजना बनाइये। 21 जून को एक साथ, एक समय सारे हिंदुस्तान में योग हो, दुनिया के सारे रिकॉर्ड टूट जाए इतनी बड़ी संख्या में हो, इतने उत्तम तरीके से हो और उस काम के लिए अभी से हम लग जाए। दुनिया के अंदर इन Cadets के माध्यम से हम एक बहुत बड़ा मजबूत संदेश और एक बहुत बड़ा प्रेरक संदेश हम विश्व को दे सकते हैं।

NCC के संबंध में भी बदलती हुई दुनिया में आज सेना में सभी रूप सिर्फ शारीरिक ताकत पर निर्भर नहीं हैं। युद्ध जीतने में मानसिक ताकत सबसे बड़ी शक्ति होता है, लेकिन अब उसके साथ जुड़ा है टेक्नोलॉजी, वैज्ञानिक सामर्थ्य। पढ़े लिखे लोगों.. सबसे ज्यादा पढ़े लिखे लोग आधुनिक से आधुनिक टेक्नोलॉजी के जानकार लोग, इनकी अब सेना में बहुत आवश्यकता रही है। सारे NCC के Cadet अपने व्यक्तिगत जीवन में सर्वाधिक ऊँचाइयाँ प्राप्त करें और फिर मां भारती को अपने आप में समर्पित करें तो देश की सैन्य शक्ति में भी qualitative change आ सकता है और हमने उस दिशा में प्रयास करना चाहिए।

कुछ छोटे-मोटे बदलाव भी हम करना चाहते हैं। मैंने Naval NCC के लिए कहा था कि क्यों न हमारे समुद्र तट के जो शहर हैं, छोटे नगर हैं और जहां NCC का यूनिट है। हमें कोशिश करनी चाहिए कि समुद्र तट के सभी एनसीसी यूनिट हो

सके तो Naval यूनिट हो ताकि उनका समुद्र से नाता होता है, और समुद्र से नाता होता है तो आगे चलकर Navy में career बनाना भी उनको सहज स्वभाविक लगता है। और मुझे अच्छा लगा इस बार Naval के जो कैम पहले कभी यूनिवर्सिटी के कैम्पस में लगते थे या फिर स्कूल के कैम्पस में लगते थे। इस बार समुद्र के अंदर जहाज के अंदर NCC के लोगों के कैम्प लगे। NCC Naval के कैम्प लगे। यह अपने आप में एक अच्छा बदलाव है और इसी प्रकार से हम ज्यादा बदलाव लाना समायानुकूल बदलाव लाना और हमारी इस ताकत को राष्ट्र की एक अमोल धरोहर के रूप में हम कैसे आगे बढ़ाए उस दिशा में हम प्रयास करना चाहते हैं।

26 जनवरी को आप लोगों ने भारत की आन, बान, शान बढ़ाने के लिए महीने भर यहां तपस्या की है। आप ही की यह तपस्या है, जिसने रंग दिखाया है। और इसलिए मैं आप सबको हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूं, बहुत अभिनंदन करता हूं।

और आज मुझे फिर उन पुरानी यादों के साथ आपके बीच आने का अवसर मिला, इसलिए मैं स्वयं को भी बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं

वंदेमातरम, वंदेमातरम, वंदेमातरम।

महिमा वशिष्ट / तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

12-मार्च-2015 19:09 IST

बाराकुडा पोत के जलावतरण के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण हिंदी में अनुदित पाठ

माननीय प्रधानमंत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ, गणमान्य अतिथियों,

भारतीय नौसेना के हमारे जवान, समुद्र के हमारे रक्षक, जो आज यहां मौजूद हैं- मैं आपका विशेष तौर पर अभिनंदन करता हूँ।

बाराकुडा को नेशनल कोस्ट गार्ड ऑफ मॉरिशस की सेवा में प्रदान करना हमारे लिए बहुत गौरव की बात है।

मुझे यह विशेषाधिकार देने के लिए धन्यवाद। भारत को अपना भागीदार बनाने के लिए धन्यवाद।

यह पोत कोलकाता से हिंद महासागर का चक्कर लगाते हुए इस खूबसूरत किनारे पर पहुंचा है।

पीढ़ियों पहले, भारत के लोग नयी दिशा और नये जीवन की ओर चले थे।

आज, बाराकुडा अपने साथ भारत की जनता की सद्भावना और शुभकामनाएं लाया है। वह हमारे अनूठे विश्वास और भरोसे का प्रतिनिधित्व करता है।

वह हिंद महासागर क्षेत्र- हमारे समान सामुद्रिक आशियाने, की शांति और सुरक्षा के लिए हमारी साझा प्रतिबद्धता का प्रतीक है। बाराकुडा एक खूबसूरत पोत है। वह बहुत सक्षम भी है और उसे मॉरिशस की विशिष्टताओं के मुताबिक बनाया गया है।

अब वह मॉरिशस के ध्वज के साथ गर्व से तैर रहा है। यह आपके टापुओं और जलक्षेत्र की हिफाजत करेगा। आपदा और आपात परिस्थितियों में आपकी मदद के लिए मुस्तैद रहेगा।

लेकिन, यह उससे बढ़कर काम करेगा। यह हमारे हिंद महासागर को ज्यादा सुरक्षित और महफूज बनाएगा।

ऐसा करते हुए मॉरिशस एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को पूर्ण करेगा, क्योंकि हिंद महासागर विश्व के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है। यह महासागर विश्व की दो-तिहाई तेल लदान, इसका एक-तिहाई कार्गो, और इसके कंटेनर ट्रैफिक के आधे हिस्से का बोझ वहन करता है। इसके ट्रैफिक का तीन-चौथाई से ज्यादा हिस्सा विश्व के अन्य क्षेत्रों में जाता है।

विशाल हिंद महासागर क्षेत्र 40 से ज्यादा देशों और दुनिया की करीब 40 प्रतिशत आबादी की मेजबानी करता है। यह ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया, पश्चिम एशिया और अफ्रीका के पूर्वी समुद्र तट को छूता है। यह द्वीपीय देशों के रत्नों से दमकता है।

सम्भयता के संबंधों पर गौर करें, तो इस विशाल क्षेत्र में बहुत विविधता है! सोचिए इसमें कितने अपार अवसर होंगे!

आज, विश्व का मानना है कि 21वीं सदी एशिया और प्रशांत की गतिशीलता और ऊर्जा से संचालित हो रहा है, लेकिन इसका रुख हिंद महासागर की लहरे निर्धारित करेगी। इसीलिए हिंद महासागर आज पहले से कहीं ज्यादा दुनिया के आकर्षण का केंद्र बन चुका है।

हम महासागर में बढ़ते वैश्विक हितों और उपस्थिति को भी देख रहे हैं। इस बदलती दुनिया में भी, सौभाग्य की कुंजी इसी महासागर के पास है और हम तभी खुशहाल होंगे, जब सागर सबके लिए सुरक्षित, महफूज और मुक्त होंगे।

यह सुनिश्चित करना हम सभी की विशालतम सामूहिक जिम्मेदारी होगी। लेकिन हमें अन्य चुनौतियों का भी सामना करना होगा, जो हमारे क्षेत्र में असामान्य नहीं हैं।

हम सुनामी और चक्रवातों की त्रासदी देख चुके हैं।

आतंकवाद हम तक समुद्र के रास्ते पहुंचा। समुद्री डकैती की वजह से इस हद तक लोगों को जान गंवानी पड़ी है और कारोबार पर असर पड़ा है, जो आधुनिक युग में विश्वास से परे है।

गैर कानूनी रूप से मछलियां पकड़ने और तेल रिसाव से हमारी अर्थव्यवस्थाओं को नुकसान पहुंचा है। हम अपने तटों और द्वीपों पर जलवायु परिवर्तन का बढ़ता प्रभाव महसूस कर रहे हैं।

हमने यह भी देखा है कि तटीय और द्वीपीय देशों में अस्थिरता और गड़बड़ी का सागरों की सुरक्षा पर गहरा असर पड़ सकता है।

भारत हिंद महासागर के दोराहे पर है।

गुजरात के लोथल के दुनिया के प्रारम्भिक बंदरगाहों में से होने की वजह से भारत की सामुद्रिक परम्परा बहुत लम्बी है।

हमारे सांस्कृतिक पदचिन्ह एशिया और अफ्रीका में फैले हैं। हम महासागरों के पार भारतवंशियों की सशक्त मौजूदगी में हम यह बात देख सकते हैं।

समुद्रों ने कई सहस्राब्दियों से हमारे पड़ोसियों के साथ हमारे वाणिज्यिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध जोड़े हैं।

हमारे हाल के इतिहास ने हमारा ध्यान हमारे महाद्वीपीय पड़ोसियों पर केंद्रित कर दिया है। लेकिन भारत ने अपने आसपास फैले सागरों से कई तरह से आकार लिया है।

आज, हमारा 90 प्रतिशत व्यापार और 90 प्रतिशत तेल आयात समुद्र के रास्ते होता है। हमारी तटरेखा 7500 किलोमीटर, 1200 द्वीप और 2.4 मिलियन वर्ग किलोमीटर का विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र है।

भारत वैश्विक रूप से ज्यादा जुड़ता जा रहा है। हम महासागर और आसपास के क्षेत्रों पर पहले से ज्यादा निर्भर होंगे। हमें इसके भविष्य को आकार देने का हमारा उत्तरदायित्व भी समझना होगा।

इसलिए, हिंद महासागर क्षेत्र हमारी नीतिगत प्राथमिकताओं में शीर्ष पर है।

हिंद महासागर क्षेत्र के लिए हमारा विजन हमारे क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने, अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल हमारे समान सामुद्रिक आशियाने में सभी के लिए करने पर आधारित है। इसका अभिप्राय बहुत सी बातें हैं:

पहली, हम अपने मुख्य भूभाग और महाद्वीपों की सुरक्षा के लिए कुछ भी करेंगे और हमारे हितों की रक्षा करेंगे।

इसी तरह हम सुरक्षित, महफूज और स्थिर हिंद महासागर क्षेत्र सुनिश्चित करने की दिशा में काम करेंगे, जो हमें हर तरह की समृद्धि प्रदान करता है और हम महासागर की प्रचंडता अथवा संकट से घिरे लोगों को अपनी क्षमताओं से बचाएंगे।

दूसरी, हम क्षेत्र के अपने मित्रों, खास तौर पर सामुद्रिक पड़ोसी देशों और द्वीपीय देशों के साथ आर्थिक एवं सुरक्षा सहयोग बढ़ाएंगे। हम उनकी सामुद्रिक सुरक्षा क्षमताओं और उनकी आर्थिक ताकत का भी निर्माण जारी रखेंगे।

तीसरी, सामूहिक कार्रवाई और सहयोग हमारे सामुद्रिक क्षेत्र में उत्कृष्ट शांति एवं सुरक्षा लाएगा। यह हमें आपात स्थितियों से बेहतर ढंग से निपटने के लिए भी तैयार करेगा।

इसीलिए, 2008 में, भारत ने हिंद महासागर नौसैनिक संगोष्ठि को प्रोत्साहन दिया था। आज, इसके माध्यम से क्षेत्र की 35 नौसेनाओं एक साथ आयी हैं। हमारा लक्ष्य सामुद्रिक चुनौतियों पर आपसी समझ बढ़ाना और उनसे निपटने की सामूहिक योग्यता को सशक्त बनाना है।

हम सामुद्रिक सहयोग के लिए समुद्री डकैती आतंकवाद और अन्य अपराध से निपटने से लेकर सामुद्रिक सुरक्षा और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने तक के हमारे क्षेत्रीय तंत्रों- को सशक्त बनाने के प्रयासों का भी समर्थन करते हैं।

भारत ने मालदीव और श्रीलंका के साथ सामुद्रिक सुरक्षा सहयोग शुरू किया है और हमें आशा है कि मॉरिशस, सेशेल्स और क्षेत्र के अन्य देश भी इस पहल से जुड़ेंगे। चौथी, हम क्षेत्र में ज्यादा एकीकृत और सहयोगपूर्ण भविष्य चाहते हैं जो सभी के लिए निरंतर विकास की सम्भावनाओं में वृद्धि करे।

हमें व्यापार, पर्यटन और निवेश, बुनियादी ढांचे के विकास, सामुद्रिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, निरंतर मछली पालन, सामुद्रिक पर्यावरण की सुरक्षा तथा महासागर अथवा ब्लू इकॉनोमी में सहयोग को अवश्य बढ़ावा देना चाहिए।

मेरे लिए भारत के राष्ट्रीय ध्वज में नीला चक्र नीली क्रांति अथवा महासागरीय अर्थव्यवस्था की सम्भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार महासागरीय अर्थव्यवस्था हमारे लिए इतनी महत्वपूर्ण है।

जो लोग महासागरों के समीप रहते हैं, उनके लिए जलवायु परिवर्तन बहस का विषय नहीं है, बल्कि उनके वजूद के लिए गम्भीर खतरा हैं। हमें अपने क्षेत्र में नेतृत्व संभालना चाहिए और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए तटस्थ वैश्विक कार्रवाई का आह्वान करना चाहिए।

हमारी इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन क्षेत्र में निरंतर एवं समृद्ध भविष्य के हमारे विजन का महत्वपूर्ण माध्यम साबित हो सकती है।

हम अक्सर जमीन के क्षेत्र के आसपास क्षेत्रीय समूहों को परिभाषित करते हैं। अब वक्त आ गया है कि हम हिंद महासागर के गिर्द सशक्त समूह बनाने के लिए आगे आएं। हम आने वाले वर्षों में इसे नए जोश के साथ आगे बढ़ाएंगे।

आईओआरए के सचिवालय के लिए मॉरिशस से बेहतर कोई और जगह हो ही नहीं सकती थी। मुझे खुशी है कि महासचिव भारत से हैं।

पांचवीं, हिंद महासागर क्षेत्र में शांति, स्थायित्व और खुशहाली इस क्षेत्र में रहने वालों की प्राथमिक जिम्मेदारी है।

लेकिन हम जानते हैं कि दुनिया में कई ऐसे देश हैं जिनके इस क्षेत्र में जबरदस्त हिंसा और दांव हैं।

भारत उनसे गहन संपर्क बनाए हुए है। हम ऐसा वार्ता, यात्रा, अभ्यासों, क्षमता निर्माण और आर्थिक भागीदारी के जरिये कर रहे हैं।

हमारा लक्ष्य विश्वास और पारदर्शिता का वातावरण बनाना, सभी देशों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सामुद्रिक नियमों और कानूनों के प्रति सम्मान, प्राप्त करना, एक-दूसरे के हिंसा के प्रति संवेदनशीलता, सामुद्रिक मसलों का शांतिपूर्ण हल और सामुद्रिक सहयोग बढ़ाना है।

हम हिंद महासागर के लिए ऐसा भविष्य चाहते हैं जो एसएजीएआर- यानी सिक्योरिटी एंड ग्रोथ फॉर ऑल इन द रीजन (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और प्रगति) के नाम पर खरा उतरे।

हमें मॉनसून से प्रेरणा लेनी चाहिए, जो क्षेत्र में हम सभी को पोषित करता है और आपस में जोड़ता है।

हम भागीदारी के जरिये अपने क्षेत्र को उसी तरह एकजुट करेंगे, जैसे कभी भागौलिक रूप से रहे हैं।

एक महासागर जो हमारी दुनिया को जोड़ता है उसे सभी के लिए शांति और समृद्धि का मार्ग बनना चाहिए।

यह कोई इत्तेफाक नहीं है कि हिन्द महासागर क्षेत्र के लिए अपनी आशाएं मैं मॉरिशस में व्यक्त कर रहा हूँ।

मॉरिशस के साथ हमारी भागीदारी दुनिया में हमारे सशक्त सामुद्रिक संबंधों में से है।

हमारी भागीदारी बढ़ेगी। हम मिलकर अपनी क्षमताओं का निर्माण करेंगे। हम मिलकर प्रशिक्षण लेंगे और मिलकर समुद्र में गश्त करेंगे।

लेकिन इस भागीदारी की बुनियाद बहुत बड़ी है। यह हमारे साझा मूल्य और समान विजन है।

हम अपने अधिकार क्षेत्र से परे जाकर क्षेत्र के लिए अपने उत्तरदायित्व का वहन करना चाहते हैं।

मॉरिशस हिंद महासागर के सुरक्षित और सतत भविष्य के लिए प्रमुख लीडर है। हमें, भारत को आपका भागीदार होने पर गर्व है।

बहुत बहुत धन्यवाद और आप सभी को मेरी शुभकामनाएं।

वि.कासोटिया/एएम/आरके/केजे-1266

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

10-अप्रैल-2015 11:48 IST

पेरिस में समझौतों पर हस्ताक्षर के बाद प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए वक्तव्य का मूल पाठ

His Excellency President Hollande एवं उपस्थित मीडिया के सभी प्रतिनिधि,

आज यहां फ्रांस आकर मुझे बहुत खुशी हुई है। मैं राष्ट्रपति जी का और फ्रांस की जनता का मेरे स्वागत और सम्मान के लिए हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। यूरोप की मेरी यह पहली यात्रा है। लेकिन पहली यात्रा मैं फ्रांस से शुरू कर रहा हूँ। यह इस बात का प्रतीक है कि भारत और फ्रांस के संबंध कितने गहरे हैं, कितने पुराने हैं, कितने महत्वपूर्ण हैं और भविष्य में इनका क्या महत्व है। फ्रांस भारत के सबसे घनिष्ठ मित्रों और विश्वसनीय Partners में से एक है। जैसा कि राष्ट्रपति जी ने बताया कि हम कई बातों में साझी परंपराओं को ले करके आगे बढ़ रहे हैं। अच्छे समय और चुनौती भरे समय में दोनों में फ्रांस भारत के साथ खड़ा रहा है। फ्रांस सदैव भारत के प्रति संवेदनशील रहा है और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर फ्रांस ने खुलेआम भारत का साथ दिया है और भारत का समर्थन किया है। हम दो बड़े लोकतंत्र देश हैं। हमारे मूल्य एक जैसे हैं हमारे हित कई मायने में एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, एक दूसरे के पूरक हैं। हमारे संबंध व्यापक हैं, जमीन से आसमान तक, सागर से अंतरिक्ष तक और अब साइबर क्षेत्र में भी हम सहयोग कर रहे हैं। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिसमें फ्रांस और भारत की साझेदारी न हो। आज मेरी और राष्ट्रपति ओलौन्द की बहुत अच्छी बातचीत हुई। हमारे रक्षा क्षेत्र के संबंध पुराने और गहन हैं। Defense Equipment और Technology में फ्रांस हमेशा एक भरोसेमंद Supplier रहा है। Fighter Jet से लेकर Submarines तक हमारे सहयोग उत्तम रहे हैं। भारत में Fighter Air Craft की Critical operational necessity को ध्यान में रखते हुए मैंने राष्ट्रपति जी से 36 Rafael Jets Flyaway Condition में जल्द से जल्द दोनों सरकारों के समझौतों के माध्यम से खरीदने की बात की है। हम दोनों ने निर्णय किया है कि भारत के लिए यह अलग प्रक्रिया में दिए गए that the terms and conditions would be modified for this purpose, साथ ही साथ राष्ट्रपति जी ने Defense क्षेत्र में Make In India का पूरा समर्थन किया है और Make In India सिर्फ Project नहीं बल्कि एक Ambition के रूप में आपने उसकी सराहना की है।

भारत और फ्रांस की कंपनियां मिलकर भारत में रक्षा उपकरण बनाएंगी और साथ ही साथ रक्षा तकनीकों का विकास भी करेंगी। इस संदर्भ में आज मेरी फ्रांस की डिफेंस कंपनियों से काफी विस्तार से बातें हुई हैं। आज हम भारत और फ्रांस की रक्षा साझेदारी को एक नए स्तर पर ले गए हैं। Nuclear Power के क्षेत्र में फ्रांस भारत के प्रमुख साझेदारों में से एक है। मुझे खुशी है कि जैतापुर में Six Nuclear plant बनाने पर हमने प्रगति की है। बिजली बनाने की कीमत को कम करने के संदर्भ में और अधिक तकनीकी क्षमता और Study करने के लिए दोनों पक्षों ने आज समझौता किया है। विशेषकर आज AREVA और L & T के बीच भारत में Forgings बनाने के लिए समझौता हुआ है और मैं मानता हूँ कि यह समझौता बहुत ही महत्वपूर्ण है। Make In India का यह उत्तम उदाहरण होगा और भारत को Advanced Technology के क्षेत्र में एक नई जगह मिलेगी।

International Export Control Regime में सदस्यता के लिए भारत फ्रांस के ठोस समर्थन के लिए बहुत आभारी है। अंतरिक्ष सहयोग में भारत और फ्रांस ने 50 वर्ष पूर्ण किए हैं। मुझे खुशी है कि आज राष्ट्रपति जी और मैंने भारत और फ्रांस का एक संयुक्त Postal Stamp जारी किया है। हमने साथ मिलकर Satellite के निर्माण और Launch में सहयोग को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया है। भारत के मंगलयान मिशन के बाद हम अब मिल करके Planetary Exploration में भी सहयोग करेंगे। आज भारत में विश्व में सबसे तेज गति से आर्थिक वृद्धि हो रही है। भारत के विकास में फ्रांस बड़ा योगदान दे सकता है और उसका यहां पर भी आर्थिक लाभ होगा। आज सुबह मैं Infrastructure के क्षेत्र में फ्रांस की Industries से मिला था। राष्ट्रपति और मैं अभी CEO Forum से भी मिलें। मेरा विश्वास बढ़ा है कि फ्रांस की कंपनियां भारत में निवेश बढ़ाएंगी। भारत के Railway Infrastructure के नवीनीकरण में भी हम सहयोग करेंगे। मेरी सरकार की अन्य पहलें जैसे Skill Development, Renewable Energy, Energy Efficiency, Smart Cities, Digital India क्षेत्रों में हम फ्रांस के साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे। Science and technology हमारे संबंधों का अहम स्तम्भ है। आज दो महत्वपूर्ण समझौते हुए हैं। मैं Ocean Economy का Sustainable विकास यानी कि Blue Revolution पर बहुत बल देता हूँ। इस संदर्भ में आज Marine Biology के क्षेत्र में समझौते का विशेष स्वागत करता हूँ। मुझे बहुत खुशी है कि फ्रांस

हमारे साथ मिलकर Urban Heritage और Tourism Promotion में आगे बढ़ेगा। इस क्षेत्र में फ्रांस की क्षमता से सभी परिचित हैं। मुझे राष्ट्रपति जी को यह बताते हुए बहुत प्रसन्नता हुई कि फ्रांस के नागरिकों को Electronic Travel Authorization के माध्यम से आसानी से भारत आने की सुविधा दी जाएगी, जो संबंधों को तो बनाते हैं साथ ही Tourism के लिए भी सरलता पैदा करते हैं। आज हमने समझौता किया है कि दोनों देशों में पढ़ाई के बाद हमारे छात्र देश में और समय रहकर Professional Training कर सकते हैं। जिससे उनको रोजगार मिलने की क्षमता बढ़ेगी। आज विश्व में एक चुनौतीपूर्ण माहौल है। कई क्षेत्रों में उथल-पुथल हो रही है। जिससे सभी प्रभावित हैं। बदलती दुनिया में स्थिरता के बारे में कई अनिश्चित प्रश्न हैं।

समुद्री, साइबर और अंतरिक्ष सुरक्षा सभी के लिए चिंता का कारण है। आतंक फैल रहा है और नए-नए स्वरूप ले रहा है। विश्व के अनेक क्षेत्रों और शहरों में इस चुनौती का सामना किया जा रहा है। चाहे पेरिस हो या मुंबई, भारत और फ्रांस ने एक-दूसरे के दर्द को सहा है और समझा है। इस वैश्विक चुनौती के लिए व्यापक वैश्विक Strategy की आवश्यकता है। इसमें हर देश का यह दायित्व है कि आतंक के विरोध लड़ाई में पूरा समर्थन दें और आतंक समूहों को पनाह लेने न दें और आतंकवादियों को जल्द से जल्द सजा दें। भारत और फ्रांस इन चुनौतियों को कई मायने में एक तरह से देखते हैं और इस कारण हम अपने सुरक्षा सहयोग को और घनिष्ठ करेंगे। इस संदर्भ में हम Indian Ocean के बारे में विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। UN Security Council के Reforms हम दोनों का संयुक्त दायित्व है। भारत की Security Council की Permanent Membership के लिए समर्थन के लिए मैं फ्रांस का बहुत आभारी हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि इस वर्ष के अंत में पेरिस में होने वाले Cop-21 सम्मेलन में फ्रांस के नेतृत्व में विश्व के लिए एक नया Roadmap बनेगा। भारत और फ्रांस मिलकर Climate Change और ऊर्जा के विषयों पर अपना सहयोग आगे बढ़ाएंगे। अंत में, मैं फिर से राष्ट्रपति जी को धन्यवाद देता हूँ। मुझे विश्वास है कि हमारी Strategic Partnership आज एक नई ऊंचाई पर पहुंची है जो दोनों देशों के नागरिकों के भविष्य को उज्ज्वल करने में और विश्व में शांति, सुरक्षा और समृद्धि को साकार करने में योगदान देगी।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

हिमांशु सिंह / हरीश जैन, सोनिका

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

29-सितम्बर-2015 12:46 IST

शांति स्थापना के अभियानों से संबंधित शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री का वक्तव्य

राष्ट्रपति बराक ओबामा,
महासचिव बान की मून,
महामहिम,

संयुक्त राष्ट्र की बुनियाद दूसरे विश्व युद्ध के जंग के मैदानों में जांबाज सैनिकों ने रखी थी। 1945 तक, उनमें भारतीय सेना के 2.5 मिलियन जवान थे, जो इतिहास का सबसे विशाल स्वयंसेवी बल था। उनमें से 24,000 से ज्यादा जवानों ने अपने प्राण गंवाए और लगभग आधे लापता हो गए।

बलिदान की यह विरासत यहां मौजूद तीनों देशों ने साझा की है। वे आज संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में सबसे ज्यादा योगदान देने वाले देशों में से हैं।

संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में 180, 000 से ज्यादा भारतीय सैनिकों ने भाग लिया है, जो किसी भी अन्य देश से ज्यादा है। भारत ने अब तक 69 संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में से 48 में हिस्सा लिया है। संयुक्त राष्ट्र के मिशनों में भाग लेते हुए 161 भारतीय शांति सैनिकों ने सर्वोच्च बलिदान दिया है।

भारत पहला देश है, जिसने लाइबेरिया में संयुक्त राष्ट्र मिशन के दौरान अपनी महिला फॉर्मड पुलिस यूनिट को भेजा।

भारत बड़ी तादाद में देशों के शांति रक्षक अधिकारियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराता आया है। अब तक, 82 देशों के करीब 800 अधिकारियों को हम प्रशिक्षण दे चुके हैं।

में शांति स्थापना अभियानों पर शिखर सम्मेलन बुलाने के लिए राष्ट्रपति ओबामा का आभार व्यक्त करता हूं। इस संगठन की 70वीं वर्षगांठ होने की वजह से ही यह सामयिक नहीं है, बल्कि यह इसलिए भी सामयिक है, क्योंकि सुरक्षा का वातावरण बदल रहा है, शांति स्थापना की मांग बढ़ रही है, जबकि संसाधन खोज पाना कठिन है।

आज शांति रक्षकों को सिर्फ शांति और सुरक्षा बहाल रखने के लिए ही नहीं बुलाया जाता, बल्कि कई जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए भी बुलाया जाता है।

आदेश महत्वाकांक्षी होते हैं, लेकिन संसाधन अक्सर अपर्याप्त होते हैं। आदेश अक्सर शांति रक्षकों को संघर्ष का पक्ष बना देते हैं जिससे उनका जीवन और उनके मिशन की सफलता खतरे में पड़ जाती है।

इन समस्याओं का कारण काफी हद तक यह है कि सैनिकों का योगदान देने वाले देशों की निर्णय लेने की प्रक्रिया में कोई भूमिका नहीं होती। वरिष्ठ प्रबंधन और बल के कमांडर के रूप में उनका पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं होता। शांति रक्षा अभियान विवेकपूर्ण तरीके से, अपनी सीमाओं को पूरी तरह समझते हुए और राजनीतिक समाधानों की सहायता से संचालित किए जाने चाहिए।

हमें खुशी है कि शांति अभियानों पर उच्च स्तरीय स्वतंत्र पैनल ने इन विषयों की पहचान की है। पैनल की सिफारिशों पर तत्काल रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए हम संयुक्त राष्ट्र महासचिव का आभार व्यक्त करते हैं। हम उनके जल्द विचार करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों के लिए भारत की प्रतिबद्धता मजबूती से बनी रहेगी और इसमें वृद्धि होगी।

हम संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों के लिए अपने नए अपेक्षित योगदानों की घोषणा कर चुके हैं।

इनमें मौजूदा अथवा नये अभियानों के लिए 850 सैनिकों तक की अतिरिक्त बटालियन, महिला शांति रक्षकों के अधिक प्रतिनिधित्व के साथ अतिरिक्त 03 पुलिस यूनिट्स, महत्वपूर्ण साधन उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता, संयुक्त राष्ट्र मिशनों में तकनीकी कर्मियों की तैनाती, और भारत में हमारी सुविधाओं पर और मैदान में शांति रक्षकों को अतिरिक्त प्रशिक्षण देना शामिल है।

अंत में मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों की सफलता आखिरकार सैनिकों द्वारा उठाए जाने वाले हथियारों पर नहीं, बल्कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा लिए जाने वाले फैसलों के नैतिक बल पर निर्भर करती है।

हमें निश्चित समय सीमा में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार लाने के काफी समय से लंबित कार्य को हर हाल में पूरा करना चाहिए, ताकि संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता और प्रभावशीलता संरक्षित रहे।

में संयुक्त राष्ट्र के सर्वोच्च आदर्शों की रक्षा की खातिर प्राण न्योछावर करने वाले शांति रक्षकों को श्रद्धांजलि देता हूं। यदि शांति रक्षकों की याद में प्रस्तावित स्मारक दीवार का निर्माण जल्द हो जाए, तो यह बहुत उपयुक्त होगा। भारत इस उद्देश्य के लिए वित्तीय सहित अन्य प्रकार का योगदान करने को तत्पर है।

आरके/एनआर - 4706

